ISSN2249-894X Impact Factor :3.1402 (UIF) Volume- 5 |Issue- 11 |August - 2016

Review Of Research

UPANYAS LEKHIKAVOM KA RAJANAITHIK AVABODH

Dr. T. Sreedevi
Associate Professor, Department of Hindi, M.G. College,Thiruvananthapuram, Kerala.

राजनीति, समाज, शिक्षा, विज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्रों में स्त्रियों ने अपनी योग्यता प्रमाणित की है। नारी का युग सापेक्ष बदलाब साहित्य में भी प्रतिध्वनित होना स्वाभाविक है। महात्मागाँधी के नेतृत्व में जनवादी आन्दोलन की अवघी में महिलाओं को समाज में अपना कुछ भूमिका मिली। श्रीमती इन्दिरागाँधी ने पूरे अठारह साल तक देश के नेतृत्व किया। उसमें नारी का शक्तिशाली राजनैतिक रूप हमने देख लिया। अनेक महिलाओं ने मुख्यमंत्री पद की आभा बढ़ाई। राज्यपाल के रूप में मंत्रिमंडल के सदस्य के रूप में अनेक महिलायें शामिल हो गये।

लेकिन बिडंबना की बात यह है कि वहाँ से लेकर अब तक देखे तो नारियों की संख्या और राजनीति में उनकी शक्ति की कमी होती जा रही है। शिक्षा रो यहाँ तक बाधा हम नहीं कह सकते क्योंकि कम शिक्षित और अशिक्षित पुरुष भी राजनीति में दिखाई पडते हैं। महिलाओं की प्रस्तुत डालन का कारण सिर्फ पुरुष ही जिम्मेदार नहीं है स्त्री भी जिम्मेदार है। महिला शाक्तीकरण केलिए भेदभाव के विचारों, विकासों और दॉष्टिकोणों से बनाए रखे विचारधारा को बदलना होगा जिसमें शक्ति हे, पूँजी है और अधिकार है शब्द का बागिडोर उसमें होना स्वाभाविक है।

स्त्री और पुरुष एक नहीं है। अलग-अलग विचार, शारीरिक गठन और वैचारिकता आदि, उनमें है। सुदृढ सामाजिक गठन केलिए नारी में सौ प्रतिशत नारी सहज योग्यतायें और पुरुष, में सौ प्रतिशत सहज योग्यतायें होना अनुवार्य है। हर एक को उचित स्थान देना और व्यक्ति मूल्य के आधार पर तौलना समीचीन लगता है। सिन्धू घाटी की सभ्यता से लेकर वैदिक काल से होकर उत्तर वैदिक काल तक भारत इसप्रकारं की संस्कृति में रखनेवाला देश है। लेकिन उत्तर वैदिक काल से होकर स्त्रियों की दशा में गिरवट आने लगी । मैर्य युग से राजपुत युद तक नारी का कार्य क्षेत्र केवल घर की चहर दिवारी तक सीमित रहा। उच्चवर्ग की नारियाँ शिक्षा प्राप्त कर सकती थी. मध्य युग के दासप्रथा के विश्वास रूप के कारण अधिकतर नारियाँ शिक्षा से वंचित रहती थी। अज्ञान अंधविश्वास आदि के कारण नारी का पतन परिपूर्ण हो गया।

इन सभी परिस्थितियों के बीच उच्चवर्ग के कुछ महिलायें साहित्य राजनीती और धार्मिक समितियों के बीच सुशोभित करते थे। महाकाव्य काल की कुन्दी, देवयानी, द्रौपदी, उत्तरा, सीता, मध्ययुग के पद्मावती, मीराभाई, देवल राणी रूपवती, वैदिक युग के गार्गी, मैत्रेयी, मुगदलशासक परिवारों के चाँद बीबी, नूरजहाँ, मुमताज़ आदि उपदाना है।

साहित्य की सशक्त विधा उपन्यास में विशेष नारी समाज का आधुनिक युग-बोध निरिचर रूप से पाया जाता है। समकालीन उपन्यास साहित्य में विशेष राजनैतिक दृष्टिकोण अपनाते हुए अनेक महिला उपन्यासकार हमारे सामने आ गयी है। इनकी तूलिका से अनेक साहसी एवं दृढ व्यक्तिवाली नारियाँ हमारे बीच प्रशोभित दी रही है। ये अल्पसंख्यक होती है तो भी शक्तिशाली है. मालती परुलकर एक ऐसी लेखिका है जिनकी लेखनी से सशकत राजनैतिक अवबोधवाली नारियाँ हमारे पास आ बैठती है। उनकी जहाँ पौ फटनेवाली उपन्यास की देव की माँ शक्तिशाली राजनैतिक अवबोध रखनेवाली है- अभीतक दबी-दबी रहनेवाली माँ में एकाएक पुर्ती और निर्णय शक्ति का उदय हुआ...हीन ग्रन्थयों से दबी और सहमी माँ की संकील्णता का, वृहद विरतृतीकरण सुभगबाई की प्रेरण स्वरूप, राजनीतिक क्षेत्र में आने पर होता है। माँ प्रचडे मतों से जीतकर संसद सदस्त बनी। माँ स्वोत्विक और आदरमयी लेकिन अशिक्षित है। अशिक्षा उनकेलिए एक बाधा नहीं है। ज़रूरत पडने पर वह स्वयं अपनी शक्ति को दृढ निकालती है और आगे बढती है। प्रस्तुत नारी पात्र द्वारा लेखिका यह कहना चाहती है कि अशिक्षा राजनीति के क्षेत्र में नारियों केलिए एक बाघा नहीं है।

'जहाँ पौ फटने वाली है' की नायिक कहती है- दलित नेताओं का उनके सामर्थ्य के अनुसार स्वागत करने की सिवाय एवं खुद अपने दलित परिवार के पालन करने का औदार्य व्यक्त करने के सिवाय बब्बा ने पूरी उम्र में हरिजनों केलिए कुछ नहीं किया। यहाँ सता का मोह और उनके दिल्बद आवाज़ उठानेवाली स्त्री का रूप खरा उतरता है।

क्रांति दिवेदी का उपन्यास 'फूलों की सपना' की नायिका द्वारा नारी का नेतृत्व गुण की ओर लेखिका हमारा ध्यान आकर्षित करती है। अच्छा भाषण राजनैतिक नेताओं का अवश्य गुण है। यहाँ शिल्पा भीड़ में बोलनेवाली, भीड़ को संभालनेवाली पद के दायित्वों को निभानेवाली सशत्क नेता के रूप में आती है और पाठकों को मुग्ध करती है।

वास्तव में भारत की राजनीति इसलिए संकट और गतिरंघ का शिकार बनती है कि नेतागण, राजनैतिक स्थान और शान के पीछे जानेवाला है। यहाँ समकालीन उपन्यास लेखिकायें नारी की राष्ट्रीयबोध, चेतना और अस्निता की ओर ध्यान खींचतकी है। मन्नु भण्डारी के महाभोज उपन्यास शासन पद का नहीं जनता की एकता और शक्ति में जोर करते हुए आता है- 'इस चात को देख लिया सबने कि जनता की एकता में बड़ा ज़ोर है तुफानी जोर तूफान आता है तो बड़े बड़े राज्य उल्ट देता है'।

प्रतिभाराय की द्रौपदी की कृष्णा बडी सूक्षामदर्श एवं साहसी नारी है उनके अनुसार- नारी के सम्मान की रक्षा करना राजधर्म है फिर अपने वंश की कुलवधू की अमर्योदा करना क्या कुरु राजाओं की शोभा देता है? ....नारी हृदय कोमल-ज़रूर, दुर्बल नहीं। नारी की उसका सहज स्वरूप है वही कोमलता परिवार में समाज में और राष्ट्र में उसकी शोभा बढाती है। लेकिन उसको दुर्बल नहीं समझना। अपने विरुद्ध दुराचार करनेवाले सभी पुरुषों के संम्मुख लेखिका राजनैतिक उद्योघ वाली कृष्णा द्वारा आवाज़ उठाती है। और चेतावनी देती हैं।

'मीनरे' राशिप्रभाशास्त्री की एक सफल राजनैतिक उपन्यास है। इसकी नायिका प्रेमा दिवान एक सफल राजनीतिज्ञ के रूप में प्रशोभित है प्रेमा कोई स्थान बी नहीं है। इन सबके बिना भी उन्होंने राष्ट्र की भलाई केलिए कुछ किया। महाविद्य़ालय की प्रचार्य प्रेमा दिवान को अपनी संस्था के कार्यों में अल्पशिक्षक व्यवस्थ्यापाकों का अनावश्यक हस्ताक्षेप पीड़ा पहूँचाता है। छात्र नेताओं और व्यवस्थापकों के बीच कई परिस्थिति में वह विवश हो उठती है। वास्तव में आगमी पीढी के दिस्दर्शन करानेवाले इस महाविद्यालय के विरुद्ध होनेवाले तरीकों के प्रति स्वार्थी देशद्रोहियों के प्रति प्रेमा नफरत करती है- तुम ईट, पत्थर- सीमेंट लकडी का व्यापार करनेवाले, इन संस्थाओं में चुम घुसते ही क्यों हो? शिक्षा संस्थाओं पर राज करने का हक चुम्हें किसने दि.या? कालाधन बनानेवाले तुम स्मगलर्य..तुम जिनके पास चाँदी सोने के टुकडे हैं..चुम चाहगते हो बुद्धिजीवी लोग तुम्हारी जो हड़ूरी करें। किसी राजनैतिक दलों की सहायता बिना यहाँ प्रेमादिवान आगमी पीढ़ी का दिग्दर्शन कराती है और राष्ट्रसेवा करती है। सच्ची राजनीती यही है। इस प्रकार की नारियों को रोलमोडल बनेगा तो भारत की राजनैतिक भविष्य बलशाली होगा। आज की राजनीति सिर्फ वर्तमान पीढ़ी को ही नहीं, आगमी पीढ़ी को भी भ्रष्टाचार का अड्डा बनेगा। नयी पीढ़ी का नमूना बनाने केलिए यहाँ कोई भी नेता नहीं है।

इस अवसर पर समकालीन उपन्यास लेखिकाओं के तीखे राजनैतिक भाव बोध वाले नारी पात्र बुलन्द आवाज़ उठाकर पाठकों के सामने आते हैं। जिनको देखकर ऐसा लगता है हमारे राष्ट्र के राजनैतिक नेताओं के पद के लिए ये ही सर्वधा योग्य है और इनके हाथों में भारत की राजनैतिक भविष्य सुरक्षित रहेगा।